ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 125-126

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

श्रीलंका में आर्थिक संकट - एक विवेचना

डॉ0 बबिता वैदिक

एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय टूंडला, फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-18.04.2022, Revised-24.04.2022, Accepted-26.04.2022 E-mail: babita-vedic@gmail-com

सारांशः– *समय–समय पर विभिन्न देश आर्थिक संकट की समस्या से जूझते रहे है यदि वर्तमान समय की बात करें तो एशिया महाद्वीप का देश श्रीलंका आर्थिक संकट से जूझ रहा है। श्रीलंका में आर्थिक संकट 2019 में शुरू हुआ था। यह 1948 में अपनी स्वतंत्रता के बाद से देश का सबसे खराब आर्थिक संकट है भुगतान संतुलन की गंभीर समस्या के कारण श्रीलंका की अर्थव्यवस्था इन दिनों संकट में है। उसका विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से घटता जा रहा है और देश के लिए आवश्यक उपभोग की वस्तुओं का आयात करना कठिन होता जा रहा है। श्रीलंका का वर्तमान आर्थिक संकट उसकी आर्थिक संरचना में निहित ऐतिहासिक असंतुलन अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष कि ऋण संबंधी शर्तों और सत्तावादी शासकों की गुमराह नीतियों का परिणाम है। गम्भीर आर्थिक संकट ने श्रीलंका में रोजमर्रा के जीवन को संघर्ष पूर्ण बना दिया है।*

कुंजीभूत शब्द– आर्थिक संकट, आर्थिक संकट, स्वतंत्रता, भुगतान, संतुलन, अर्थव्यवस्था, मुद्रा भंडार, उपभोग की वस्तुओं।

श्रीलंका में आर्थिक संकट के कारण– श्रीलंका में आर्थिक संकट के कारणों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझाया जा सकता है। कर कटौती और धन सृजन– राष्ट्रपति को गोटबाया राजपक्षे के नेतृत्व में श्रीलंका की सरकार ने बड़ें कर कटौती की, जिससे सरकारी राजस्व और राजकोषीय नीतियां प्रभावित हुई। जिससे बजट घाटा बढ़ गया कर राजस्व की भारी नुकसान के परिणाम स्वरूप रेटिंग एजेंसियों ने सो बरन क्रेडिट रेटिंग को डाउनग्रेड कर दिया। जिस से अधिक कर्ज लेना मुश्किल हो गया 2021 मे पी वी जे सुंदर ने कहा कि राष्ट्रपति राजपक्षे को राजस्व के नुकघ्सान के बारे में पता था लेकिन उन्होंने इसे एक निवेश माना और अगले पाँच वर्षों के लिए करों को बढ़ाने की कोई योजना नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की सलाह की अनदेखी करते हुए रिकॉर्ड मात्रा में पैसा छापना शुरू कर दिया। जिसकी चेतावनी अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष ने दी थी की पैसा छापना जारी रखने से आर्थिक पतन होगा।

विदेशी कर्ज– विदेशी ऋण 2019 में सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 42 प्रतिशत था जो 2021 में सकल घरेलू उत्पाद का 119 प्रतिशत हो गया। 2022 के अंत तक देश देनदारों को 4 बिलियन + का भुगतान करना है, जबकि अप्रैल 2022 में सरकारी भंडार 2.3 विलियन था।

उर्वरक प्रतिबंध– वर्ष 2021 में सरकार ने सभी उर्वरक आयातों पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया और श्रीलंका को रातों रात 100 प्रतिशत जैविक खेती वाला देश बनाने की घोषणा कर दी गई। रातोंरात जैविक खादों की ओर आगे बढ़ जाने के इस प्रयोग ने खाद्य उत्पादन को गंभीर रूप से प्रभावित किया विदेशी मुद्रा की कमी के साथ साथ रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर रातोंरात आरोपित विनाशकारी प्रतिबंध ने खाद्य कीमतों को और बढ़ा दिया, मुद्रास्फीति का स्तर वर्तमान में 15% से अधिक है और इसके औसतन 17.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जिससे लाखों गरीब श्रीलंकाई गंभीर संकट की इस स्थिति में पहुँच गए हैं।

विदेशी प्रेषण में गिरावट– कैब्राल के तहत श्रीलंका के सेंट्रल बैंक ने भारी पैसे की छपाई और विनिमय नियंत्रण जारी रखते हुए सत आंकी को बनाए रखने का प्रयास किया और इस प्रकार रुपया को नीचे धकेल दिया, जिससे श्रीलंका के बैंक विदेशी मुद्रा से बाहर हो गए। जनवरी 2022 में आधिकारिक प्रेक्षण में 61 प्रतिशत की कमी के साथ विदेशी प्रेक्षण दुर्घटनाग्रस्त हो गए।

रूस यूक्रेनी युद्ध– रूस यूक्रेन युद्ध के कारण यूक्रेन और रूस के बीच जारी तनाव पूर्ण इस स्थिति का असर श्रीलंका की पहले से ही सुस्त आर्थिक की स्थिति में महसूस किया जा रहा है। यूक्रेन पर 2022 के रूसी आक्रमण ने देश की आर्थिक आपदा को और बढ़ा दिया है, क्योंकि चाय निर्यात में श्रीलंका के लिए दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। यूक्रेनी संकट ने श्रीलंका के आर्थिक सुधार के रास्ते को रोक दिया है चाय निर्यात को बुरी तरह से प्रभावित किया है

चीन की नजदीकियों का असर– चीन की रणनीति ऐसी है कि जिस जिस देश में उसने अपने निवेश बढ़ाएं है वहाँ राजनैतिक और आर्थिक अस्थिरता तेजी से बढ़ी है श्रीलंका और पाकिस्तान बड़ें उदाहरण है धीरे–धीरे पाकिस्तान भी उसी स्थिति की ओर आगे बढ़ रहा है, जैसी स्थिति श्रीलंका में है

श्रीलंका से हुई रणनीति की गलती– श्रीलंका एक छोटा देश है, जिसकी आबादी 2.25 करोड़ है फिर भी वहाँ पेट्रोल डीजल की किल्लत हो गयी है। नागरिकों को पेट्रोल डीजल मुहैया कराने में सरकार असफल हो रही है। भारत में 140 करोड़

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

की आबादी होने के बावजूद पेट्रोल डीजल के लिए लाइन में नहीं लगना पड़ता। दरअसल रूस अब भारत को कम कीमतों पर तेल बेचने पर राजी हो गया है। भारत और रूस के बीच हुई, इस डील से अमेरिका जैसे देश काफी नाराज हैं। श्रीलंका इस कूटनीति पर चलने में असफल रहा है।

राजपक्षे भाइयों की गलत नीतियां – श्रीलंका की आर्थिक संकट का एक मुख्य कारण यह भी रहा कि राजपक्षे भाईयों ने सत्ता में बने रहने के लिए एक के बाद एक बड़ी लोक लुभावन नीतियों की भी घोषणा की। 2019 में चुनाव प्रचार के दौरान राजपक्षे ने टैक्स में भारी छूट का वादा किया और यह है उनके सत्ता में आने के बाद राजकोषीय घाटे को बढ़ाने की एक बहुत बड़ी वजह बना जो पैसे श्रीलंका के इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए थे बोगस निवेश के प्रोजेक्टों में और जनता को ज्यादा सब्सिडी देने में खर्चे हो गए हैं।

विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट– श्रीलंका की विदेशी मुद्रा भंडार में 70 फीसदी की गिरावट आयी है। फिलहाल श्रीलंका के 2.31 अरब डॉलर बचे हैं ये विदेशी मुद्रा के रूप में सिर्फ 17.5 करोड़ रुपये ही श्रीलंका के पास है। श्रीलंका कच्चें तेल और अन्य चीजों के आयात पर एक साल में 19 हजार करोड़ रुपए खर्च करता है लेकिन श्रीलंका के पास सिर्फ 17.5 करोड़ रुपये ही हैं।

राष्ट्रपति शासन प्रणाली की भूमिका – श्रीलंका के आर्थिक संकट में राष्ट्रपति शासन प्रणाली की बेहद अहम भूमिका मानी जा रही है श्रीलंका ने 1978 में राष्ट्रपति शासन प्रणाली अपनायी तभी से यह विवादों में है। सत्ताधारी दल द्वारा सार्वजनिक संपत्ति के दुरुपयोग और मनमाने फैसलों के कारण राष्ट्रपति के शासन तंत्र पर नियंत्रण का कोई इंतजाम नहीं है। जो था, उसे भी राष्ट्रपति को कानून से ऊपर मानने वाले कानूनी प्रावधानों के जरिए निष्प्रभावी कर दिया गया है।

निष्कर्ष– सरकार को देश के आर्थिक संकट को दूर करने के लिए उपाय करने चाहिए मौजूदा संकट से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों के साथ ही युद्ध प्रभावित उत्तरी और पूर्वी प्रांतों की आर्थिक विकास के लिए एक रोडमैप बनाने हेतु सरकार को तमिल राजनैतिक नेतृत्व के साथ हाथ मिलाना चाहिए।

घरेलू कर राजस्व को बढ़ाना और उधारी विशेष रूप से बाहरी स्रोतों से सॉवरेन उधारी को सीमित करने के लिए सरकारी व्यय को कम करने जैसी उपर्युक्त कदम उठाने होंगे। रियायत और सब्सिडी सम्बंधी व्यवस्था के पुनर्गठन के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए उर्वरक आयातों पर से प्रतिबंध को हटाना होगा। आर्थिक और वित्तीय विकास व्यापक आर्थिक स्थिरता को बहाल करने के लिए एक विश्वसनीय और सुसंगत रणनीति बनानी होगी। अंत में हम यह भी मानते हैं कि कुछ व्यापक राजनैतिक व्यवस्थित के मूल कारणों से भेदभाव को बढ़ावा मिला है एवं मानवाधिकारों को ठेस पहुँची है। इस मुद्दें पर लगातार ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है कर्ज भरोसे खर्च चलाने वाले देशों के लिए श्रीलंका आर्थिक संकट एक सबक है। श्रीलंका को यह मानना होगा कि बिना कमाई, खर्च बिना उत्पादन के उपभोग करना एक ऐसा लापरवाह तरीकघ है, जो बहुत दिनों काम नहीं आ सकता चाहे, बात घर चलाने की हो या देश।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दा हिन्दू एडिटोरियल में प्रकाशित EÛplaining Sri lanka economic crisis.
2. श्रीलंका की आर्थिक संकट के बारे में जानने के लिए बोर्गेने 23 अप्रैल 2022,15 मई 2022.
3. श्रीलंका ने रोकी उर्वरक सब्सिडी 22 नवंबर 2021.
4. संयुक्त राष्ट्र समाचार।
5. https// www-dnaindia -com.

*****